अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

www.ddugu.ac.in

पं. दीनदयाल उपाध्याय का

एकात्म मानवदर्शन:

सतत विकास का

व्यवहार्य मार्ग

12-14 फरवरी, 2021

आयोजक

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर

सह-आयोजक
दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ
गोरखपुर
गुरू गोरक्षनाथ शोध पीठ
गोरखपुर
दीनदयाल उपाध्याय शोध संस्थान
नई दिल्ली
पं. दीनदयाल उपाध्याय जन्मभूमि स्मारक समिति
दीनदयाल धाम, मथुरा

गोरखपुर

एक परिचय

गुरु गोरक्षनाथ की तपोभूमि, हनुमान प्रसाद पोद्दार की कर्मभूमि गोरखपुर है। गोरखपुर से सटे पश्चिम में स्थित मगहर में विराजमान महान सन्त एवं क्रान्तिकारी कवि कबीर, गोरखपुर के पूर्व कुशीनगर में महापरिनिर्वाण लिए शान्ति एवं अहिंसा का पाठ पढ़ाने वाले तथा 'अत्त दीपो भव' का संदेश देने वाले भगवान बुद्ध के साथ ही कुशीनगर से 20किमी पूर्व जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी की निर्वाण स्थली हैं। गोरखपुर से सटे जिले देवरिया को अपनी साधना भूमि बनाने वाले देवरहा बाबा एवं शैक्षिक साधना के प्रतिरूप बाबा राघवदास की भूमिका से सभी परिचित हैं। यह है, गोरखपुर की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक पहचान।

राप्ती (अचिरावती) एवं रोहित (रोहिणी) के संगम पर स्थित पूर्वांचल का प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक नगर है गोरखपुर। यह नगर शिक्षा, चिकित्सा, उद्योग, व्यापार, ऐतिहासिक इमारतों एवं धरोहरों से परिपूर्ण है। स्वदेश एवं कल्याण जैसे पत्र यहाँ से प्रकाशित हुए। ज्ञान, साहित्य एवं संस्कृति का प्रमुख प्रकाशन केन्द्र गीताप्रेस गोरखपुर में ही स्थित है। सांस्कृतिक चेतना एवं योग का प्रमुख केन्द्र गोरक्षनाथ मंदिर यहीं स्थित है। सामाजिक एवं धार्मिक समरसता का केन्द्र है गोरखपुर। यहाँ जहाँ एक तरफ जटाशंकर गुरुद्वारा है वहीं दूसरी तरफ जामामस्जिद एवं इमामबाड़ा है। असुरन चैक के पास प्राचीन विष्णु मंदिर स्थित है तो अंग्रेजी शासन काल का सेण्ट जान्स चर्च भी है। घंटाघर, रीड्स साहब धर्मशाला, सूर्यकुण्ड, यहीं गोरखपुर में ही अवस्थित हैं। बिस्मिल की शहादत भूमि यही गोरखपुर है तो प्रेमचन्द की साहित्यिक कर्मभूमि भी यही गोरखपुर है।

दीनदयाल उपाध्याय

गोरखपुर विश्वविद्यालय

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, 1957 में उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम द्वारा स्थापित, अपनी लंबी गरिमामयी यात्रा में अपने आदर्श वाक्य को जीने के लिए लगातार संघर्ष करता रहा है। अपने श्लोक 'आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः' (सभी दिशाओं से मेरे लिए नेक विचार आने दें) के माध्यम से विविध विचारों, लोगों और विश्वासों को अपने शैक्षणिक जीवन में यह विश्वविद्यालय लगातार आत्मसात करता रहा है। यह विश्वविद्यालय 26.7480 डिग्री उत्तर (अक्षांश), 83.3812 डिग्री पूर्व (देशांतर) की भौगोलिक स्थिति में स्थित है। यह विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश में आजादी के बाद स्थापित होने वाला और महान राजनीतिक विचारक पंडित दीनदयाल उपाध्याय के नाम पर पहला विश्वविद्यालय है जो कि गोरखपुर के पवित्र शहर में स्थित है, जहाँ बुद्ध. कबीर और गुरु गोरक्षनाथ की आध्यात्मिक और दार्शनिक विरासत प्रारम्भ से ही मिली है। 191.21 एकड़ में फैले इस विश्वविद्यालय में कुल 06 संकाय हैं, जिनमें 29 विभाग जो अपनी स्थापना के बाद से पूर्वी क्षेत्र के लोगों को समग्र शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आवासीय-सह-संबद्ध राज्य विश्वविद्यालय के रूप में यह विश्वविद्यालय अपनी समृद्ध शैक्षणिक विरासत, शानदार पूर्व छात्रों, अनुभवी, योग्य और समर्पित संकाय सदस्यों, पारदर्शी, प्रभावी और उत्तरदायी प्रशासनिक क्षमताओं, अत्याधुनिक पुस्तकालय, वाई-फाई सुविधाओं इत्यादि से सुसज्जित है। यह विश्वविद्यालय अपने छात्रों को उन्नत अनुसंधान सुविधाओं से सुसज्जित एक जीवंत और सुरक्षित परिसर प्रदान करता है जो कि छात्रों के रोजगारपरक भविष्य के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है। छात्रों के बीच रचनात्मक प्रतिभा और वैज्ञानिक स्वभाव को पोषित करने तथा बड़ी सामाजिक - आर्थिक और राजनीतिक वास्तविकताओं के प्रति संवेदनशील बनाने के अपने पोषित लक्ष्य के साथ, विश्वविद्यालय क्षेत्रीय और राष्ट्रीय विकास में सार्थक योगदान देने की इच्छा रखता है। विश्वविद्यालय में दीनदयाल उपाध्याय जी के विचारों के अध्ययन, शोध आदि के लिए दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ की स्थापना 2017 में हुई।

पृष्ठभूमि

वर्तमान वैश्विक परिवेश में पाश्चात्य विचारधारा से यह समाज संपोषित हो रहा है। पश्चिम से आयातित पूंजीवाद एवं साम्यवाद के अन्तर्द्वंद में फंसे दुनिया के विकासशील देश तथा उनकी विचारधाराओं के पालक देश वैकल्पिक मार्ग की तलाश में है। यह मार्ग क्या हो? इसे लेकर पूरा विश्व असमंजस में है, क्योंकि पश्चिमी विचार संरचनात्मक कमजोरियों के साथ-साथ भौतिकवाद पर आधारित है। तब पूरी दुनिया इस प्रश्न के समाधान हेतु भारतीय संस्कृति से उद्भूत पं० दीनदयाल उपाध्याय जी के 'एकात्म मानवदर्शन' की तरफ उम्मीद भरी दृष्टि से देख रही है। यह विचार हमारी सांस्कृतिक विरासत का वाहक है जो 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' एवं "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा पर आधारित है।

आज दिशाहीन समाज को इस सिद्धान्त के आधार पर ही एक दिशा दी जा सकती है। प्राचीन काल में सोने की चिड़िया कहलाने वाला हमारा राष्ट्र अपनी विकास यात्रा में आज लड़खड़ा गया है। प्राकृतिक संसाधनों से युक्त, मानव सम्पदा से परिपूर्ण हम सभी अनुकूलताएँ रखते हुए भी पश्चिम के अन्धानुकरण से आज इस दशा में पहुँच गये हैं। हमारी उन्नति पश्चिमी विचार नहीं कर सकते हमारी मनीषा ही हमें इस अंधकार से बाहर निकलने का रास्ता दे सकती है। प्राचीन काल में हमारी समृद्धि का आधार एकात्म मानवदर्शन का व्यवहारिक उपयोग ही था। आज पुनः इसे अपनाकर हम राष्ट्रव्यापी सम्मिलित स्वप्रयत्न से एक बार फिर अपने राष्ट्र को वैभवशाली बना सकते हैं।

पं. दीनदयाल उपाध्याय का

एकात्म मानवदर्शन:

सतत विकास का व्यवहार्य मार्ग' विषयक त्रिदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के माध्यम से हमारा लक्ष्य राष्ट्र को परम वैभवता प्रदान करना है। अनेक अनुत्तरित प्रश्नों के उत्तर तलाशने में यह संगोष्ठी अपनी महती भूमिका निभाएगी। वैभव की कल्पना एकांगी नहीं है क्योंकि केवल एक चीज मिलने से सब प्रकार का सुख नहीं प्राप्त होगा अपितु राष्ट्र को परम वैभव सम्पन्न बनाने के लिए ज्ञान, बल, समृद्धि, एकत्व, धर्म, अध्यात्म, संस्कृति आदि सभी रूपों से समृद्ध करना होगा। इस सन्दर्भ में दीनदयाल जी के विचार हैं - "हम भारत को न तो किसी पुराने समय की प्रतिच्छाया बनाना चाहते हैं और न रूस या अमरीका की अनुकृति। विश्व के ज्ञान और आज तक की अपनी सम्पूर्ण परम्परा के आधार पर हम ऐसे भारत का निर्माण करेंगे, जो हमारे पूर्वजों के भारत से अधिक गौरवशाली होगा, जिसमें जन्मा मानव अपने व्यक्तित्व का विकास करता हुआ सम्पूर्ण मानवता ही नहीं, अपितु सृष्टि के साथ एकात्मता का साक्षात्कार कर नर से नारायण बनने में समर्थ हो सकेगा। यह हमारी संस्कृति का शाश्वत दैवी और प्रवाहमान रूप है, चौराहे पर खड़े विश्वमानव के लिए यही हमारा दिग्दर्शन है।"

पं० दीनदयाल उपाध्याय जी के इसी दर्शन से विश्व का कल्याण सम्भव है। यह अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी चौराहे पर खड़े विश्वमानव को यदि कोई मार्ग दिखा देती है तो उससे इस संगोष्ठी की सार्थकता स्वतः सिद्ध हो जायेगी।

संगोष्ठी के उद्देश्य

- दीनदयाल जी के एकात्म मानवदर्शन के सम्बन्ध में समझ विकसित करना।
- मानवतावाद के सम्बन्ध में विश्व में प्रचलित अवधारणाओं का दीनदयाल जी के एकात्म मानवदर्शन के सम्बन्धों का विश्लेषण करना।
- मानवतावादी विचारक बुद्ध, डॉ. राममनोहर लोहिया एवं गाँधी के दर्शन से तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
- सतत विकास की अवधारणा एवं उनके विविध आयामों का विश्लेषण करना।
- सतत आर्थिक विकास की संकल्पना में दीनदयाल जी के आर्थिक चिन्तन के विभिन्न आयामों से साम्य स्थापित करना।
- सामाजिक सतत विकास हेतु सामाजिक व्यवस्था में एकात्म मानवदर्शन के मूल्यों के योगदान का विश्लेषण करना।
- आत्मनिर्भरता हेतु दीनदयाल जी के विचारों से तादात्म्य स्थापित करना।
- एक ऐसे पाठ्यक्रम को विकसित करना जो सभी उच्च शिक्षण संस्थानों में लागू किया जा सके।

सेक्टर

1 दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानवदर्शन

दीनदयाल उपाध्याय एक महान दार्शनिक थे, जिन्होंने एक ऐसा महत्वपूर्ण दर्शन पूरे विश्व के समक्ष रखा जिसके केंद्र में मानवता है। जो मानव को केंद्र बिंदु मानकर समस्त व्यवस्थाएं बनाने की बात करते हैं। इस एकात्म मानवदर्शन का आधार भारत के सनातन विचार, तत्व एवं मूल्य हैं। इन्हीं विचारों और तत्वों की व्याख्या करते हुए एकात्म मानवदर्शन का सिद्धांत दीनदयाल जी ने प्रस्तुत किया। इस सेक्टर में एकात्म मानवदर्शन के दार्शनिक पहलुओं पर विमर्श होगा। इस सेक्टर के उप विषय निम्न हैं:

- दीनदयाल उपाध्याय का जीवन दर्शन
- एकात्म मानवदर्शन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- एकात्म मानवदर्शन की वैचारिक पृष्ठभूमि
- एकात्म मानवदर्शन और भारतीय संस्कृति

2 सतत सामाजिक-आर्थिक विकास एवं एकात्म मानवदर्शन

एकात्म मानवदर्शन में समाहित आर्थिक विचारों से अर्थव्यवस्था के कुछ महत्वपूर्ण तत्व सामने आते हैं जैसे - अर्थायाम, श्रम का मूल अधिकार एवं कर्तव्य (सबको काम), अति उपभोग एवं गला काट प्रतिस्पर्धा का निषेध, विकेंद्रित अर्थव्यवस्था, स्वामी का न्यासी सिद्धांत, पूंजीवाद और समाजवाद का निषेध, आर्थिक लोकतंत्र, तीव्र औद्योगिकरण का निषेध, आदेवमात्रका कृषि, स्वयंसेवी उत्पादन क्षेत्र, श्रमिकों का स्वामित्व, अर्थ संस्कृति आदि। इस सेक्टर में विचार-विमर्श निम्न विषयों पर केन्द्रित होगा:

- विकेंद्रित अर्थव्यवस्था,
- स्वामित्व का न्यासी सिद्धांत
- आर्थिक लोकतंत्र
- लघु और कुटीर उद्योगों की महत्ता

3 आत्म-निर्भरता का विचार-सम्पोषित समाज का एक मार्ग

पं. दीनदयाल उपाध्याय ने आत्मनिर्भरता एवं एकात्म मानवदर्शन के सामाजिक पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त किये हैं, जिसमें मानव कल्याण, गरीबों की बुनियादी जरूरतें, भविष्य की पीढ़ियों के कल्याण के साथ-साथ पर्यावरणीय संसाधनों की सीमा में और संरक्षण के साथ विकास शामिल है। स्थायी समाज के लिए आत्मनिर्भरता का मार्ग, वर्तमान एवं भविष्य में बेहतर जीवन के लिए संतोषजनक ढंग से काम करने के व्यापक अवसर के साथ बुनियादी जरूरतों के अधिग्रहण का समर्थन करता है। दीनदयाल जी की अवधारणा पारंपरिक रूप से पिछड़े समुदायों के लिए एक वैकल्पिक मॉडल तैयार करती है या इन लोगों को अपनी क्षमताओं और भावनाओं पर भरोसा करने के लिए सशक्त बनाती है। इस सत्र में उनके इसी विचार और अवधारणा के बारे में चर्चा की जाएगी। इस सेक्टर के उप विषय निम्न हैं :

- आत्म-निर्भरता और वैश्विक समाज
- आत्म-निर्भरता और ग्रामीण विकास
- यू.एन. - एस.डी.जी. और सतत समाज
- आत्म-निर्भरता और शहरी समाज

4 भारतीय चिन्तन में राष्ट्र एवं राज्य की अवधारणा

राज्य एक विधिक अवधारणा है जबकि राष्ट्र सांस्कृतिक। राज्य के लिए एक निश्चित भूभाग, सरकार, संप्रभुता व जनसंख्या आवश्यक तत्व होते हैं जबकि राष्ट्र का अस्तित्व किसी राज्य की विधिक परिधि के भीतर भी हो सकता है और बाहर भी। किसी राष्ट्र का अस्तित्व ऐसे किसी भी तत्वों से हो सकता है जिसमें कोई समाज आपसी आंतरिक जुड़ाव महसूस करें। समान भाषा, धर्म, नस्ल ,सभ्यता और संस्कृति आदि ऐसे ही तत्व हैं जो किसी समाज को एक राष्ट्र के सूत्र में बांधते हैं। इस सेक्टर के उप विषय निम्न है :

- राष्ट्र की अवधारणा, भारतीय दृष्टि और दीनदयाल उपाध्याय
- राष्ट्रवाद, मानवतावाद और दीनदयाल उपाध्याय
- दीनदयाल उपाध्याय का राष्ट्र चिंतन : सशक्त भारत की प्रस्तावना
- भारत का राष्ट्र विचार : विविध संदर्भ

5 उच्च शिक्षण संस्थानों में दीनदयाल जी के दर्शन एवं विचारों पर आधारित कार्यक्रम एवं पाठ्यक्रम का विकास

एक महान दूरदर्शी के रूप में पं. दीनदयाल उपाध्याय उन विचारकों एवं राष्ट्रवादियों की विरासत का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्होंने औपनिवेशिक परिवेश की सांस्कृतिक चुनौतियों को अवशोषित करने के लिए खुद को भारतीयता की रक्षा में अग्रणी रखा। इसी कारण हमारी सभ्यता की गाथा का एक सतत इतिहास जीवित है। सर्वगुण एवं प्रतिभा संपन्न छात्र तैयार करना एक चुनौती है। बदलते वैश्विक परिवेश में दीनदयाल जी की वैचारिकी से ऐसे युवाओं का निर्माण किया जा सकता है। इस सेक्टर में इस विषय पर विशेष चर्चा होगी।

- शिक्षा प्रणाली में भारतीय विचारों, मूल्यों एवं नैतिकता की आवश्यकता : विरोधात्मक पश्चिमी अवधारणायें।
- उच्च शिक्षा एवं भारतीय लोकाचार तथा मार्क्सवादी चुनौतियां।
- पं. दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन व विचारों पर उच्च शैक्षणिक संस्थानों में पाठ्यक्रम का स्वरूप : भविष्य की योजना।
- गौतम बुद्ध, महात्मा गांधी एवं डॉ. राममनोहर लोहिया के विचारों पर आधारित मानक पाठ्यक्रम एवं अकादमिक कार्यक्रम

कामधेनु पीठ एवं सतत ग्रामीण विकास अध्ययन केंद्र

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय कामधेनु आयोग, पशुपालन विभाग और डेयरी विभाग के सहयोग से, विश्वविद्यालय में कामधेनु चेयर एवं सतत ग्रामीण विकास अध्ययन केंद्र स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है। अध्ययन केंद्र के मुख्य उद्देश्य आधुनिक और वैज्ञानिक आधार पर पशुपालन से संबंधित अनुसंधान और प्रशिक्षण का संचालन, नस्लों के संरक्षण और संवर्धन के लिए अभिनव विचारों को बढ़ावा देना, भारत के कृषि जलवायु क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की नस्लों के मानचित्रण आदि प्रमुख है । मॉड्यूल शिक्षण और परीक्षण द्वारा जागरूकता, गांव उत्पादों के उत्पादन के साथ उन उत्पादों की पैकेजिंग और विपणन अध्ययन का मुख्य केंद्र बिंदु है।इस विशेष सत्र मे विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिष्ठित विद्वानों एवं गणमान्य लोगों द्वारा गायों से संबंधित विभिन्न पहलुओं एवं विचारों को संबोधित किया जायेगा।

इस सत्र के उप विषय हैं:

- भारतीय धर्म और पौराणिक कथाओं में गाय
- गाय और सतत ग्रामीण आजीविका
- गौशाला, गायआश्रय तथा उनका प्रबंधन
- गाय और पर्यावरण पर इसका प्रभाव
- गौ नस्लें, गौ प्रजनन एवं आर्थिक पहलू।

विशिष्ट **वक्तागण**

श्रीमती आनन्दी बेन पटेल
माननीय कुलाधिपति एवं राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

श्री आरिफ मोहम्मद खान
माननीय राज्यपाल, केरल

श्री के. राजशेखरन, पूर्व राज्यपाल, मिजोरम

मा. हृदय नारायण दीक्षित, अध्यक्ष, विधान सभा, लखनऊ

श्री योगी आदित्यनाथ, माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

डॉ कृष्ण गोपाल, नई दिल्ली

श्री राम माधव, नई दिल्ली

डॉ बजरंग लाल गुप्त, क्षेत्र संचालक, उत्तर क्षेत्र

डॉ सुनील आंबेकर, मुम्बई

श्री सुनील बी. देवधर, आन्ध्र प्रदेश

डॉ. वल्लभ भाई कथीरिया, अध्यक्ष
राष्ट्रीय कामधेनु आयोग

श्रीमती तेजस्विनी अनन्थ कुमार, बंगलुरु

श्री कमलेश जी

श्री रामबहादुर राय, अध्यक्ष, इंदिरा गांधी कला केन्द्र

श्री मुकुल कानीटकर, भारतीय शिक्षण मंडल, नागपुर

डॉ बालमुकुन्द पाण्डेय, राष्ट्रीय संगठन सचिव
भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

श्री शिव प्रकाश, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

श्री अनिल, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

श्री सोन पाल सिंह, मथुरा, उ. प्र.

डॉ महेश चन्द्र शर्मा, अध्यक्ष
एकात्म मानवदर्शन अनुसंधान, नई दिल्ली

श्री प्रफुल्ल केतकर, सम्पादक - द ऑर्गनाइजर

श्री मनोज कान्त, विचारक एवं चिन्तक

प्रो. ग्लेन टी मार्टिन, यू.एस.ए.

प्रो. जयदीप चौधरी, यू.एस.ए

श्री दिग्विजय, नीदरलैंड

डॉ. मार्टिन स्टिपनर, आस्ट्रेलिया

डॉ. अलमुट रोडर, जर्मनी

श्री रमेश कंडेल जी, नेपाल

श्री नारायण प्रसाद ढकाल, नेपाल

श्री मोहन गौतम, नेपाल

डॉ. रजनीश मिश्रा, यू.एस.ए.

डॉ कुशल बरन चक्रवर्ती, चितगांव विश्वविद्यालय, बांग्लादेश

प्रो. डी.पी. सिंह, अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली

प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी, अध्यक्ष, उच्च शिक्षा आयोग

प्रो. आर. एस. दूबे, कुलपति
सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ गुजरात, गांधीनगर

प्रो. सुरेन्द्र दूबे, कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु

प्रो. के. एन. सिंह, कुलपति
राजर्षि टण्डन मुक्त वि.वि., प्रयागराज

प्रो. श्री प्रकाश मणि त्रिपाठी, कुलपति
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक

प्रो. आलोक कुमार राय, कुलपति
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

प्रो. कल्पलता पाण्डेय, कुलपति
जननायक चन्द्रशेखर वि.वि., बलिया

प्रो. ईश्वरशरण विश्वकर्मा
अध्यक्ष, उ.प्र. उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, प्रयागराज

प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा, कुलपति
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, नोएडा

प्रो. एच.सी.एस. राठौर, कुलपति
साउथ बिहार सेन्ट्रल विश्वविद्यालय, गया

प्रो. ओंकारनाथ सिंह, कुलपति
बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, राँची

प्रो. राजेश सिंह, कुलपति
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय

आयोजन **समितियाँ**

संरक्षक

श्रीमती आनन्दी बेन पटेल
माननीय कुलाधिपति
योगी आदित्यनाथ
माननीय, मुख्यमंत्री, उ.प्र.
मा. दत्तात्रेय होसबले
डॉ. कृष्णगोपाल

अन्तर्राष्ट्रीय

प्रो. ग्लेन टी मार्टिन, यू.एस.ए.
प्रो. जयदीप चौधरी, यू.एस.ए
श्री दिग्विजय, नीदरलैंड
डॉ. मार्टिन स्टिपनर, आस्ट्रेलिया
सुश्री अलमुट रोडर, जर्मनी
श्री रमेश कंडेल जी, नेपाल
श्री नारायण प्रसाद ढकाल, नेपाल
श्री मोहन गौतम, नीदरलैंड
डॉ. रजनीश मिश्रा, यू.ए.ई.

राष्ट्रीय

श्रीमती तेजस्विनी अनन्थ कुमार, बंगलुरु
श्री आशीष चौहान, मुम्बई
श्री सोन पाल सिंह, मथुरा
श्री देवेश, बंगलुरु
डॉ. श्री प्रकाश सिंह, नई दिल्ली
डॉ. अतुल जैन, नई दिल्ली
श्री शिव प्रकाश, लखनऊ
श्री सुनील वी. देवधर, आन्ध्र प्रदेश
श्री जे. नन्द कुमार, प्रज्ञा प्रवाह, नई दिल्ली
श्री अजय कुमार, स्वदेशी जागरण मंच, वाराणसी
डॉ अतुल जैन, दीनदयाल शोध संस्थान, नई दिल्ली
श्री महेन्द्र कपूर, अ. भा. राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ दिल्ली
प्रो. अशोक मोदक, नेशनल रिसर्च प्रोफेसर, मुम्बई
श्री अतुल कोठारी, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली
डॉ. रवीन्द्र महाजन, एकात्म प्रबोध मंडल, मुम्बई
प्रो. के.जी. सुरेश, भोपाल
डॉ. पवनपुत्र बादल
श्री दिनेश कुलकर्णी

स्थानीय

अध्यक्ष
प्रो. राजेश सिंह, कुलपति
दीनदयाल उपाध्याय
गोरखपुर विश्वविद्यालय

सदस्य

प्रो. ए.के. तिवारी, अधिष्ठाता, वाणिज्य संकाय
प्रो. एन.के. भोक्ता, अधिष्ठाता, शिक्षा संकाय
प्रो. नन्दिता आई.पी. सिंह, अधिष्ठाता, कला संकाय
प्रो. चन्द्रशेखर, अधिष्ठाता, विधि संकाय
प्रो. शान्तनु रस्तोगी, अधिष्ठाता, विज्ञान संकाय
प्रो. अजय सिंह, अधिष्ठाता, छात्र कल्याण
डॉ. महेन्द्र विक्रम शाही, अधिष्ठाता, कृषि संकाय
डॉ. गणेश प्रसाद, अधिष्ठाता, मेडिसिन
प्रो. सुधीर कुमार श्रीवास्तव
प्रो. विजय कुमार
प्रो. सतीश चन्द्र पाण्डेय
प्रो. विनीता पाठक
प्रो. मानवेन्द्र प्रताप सिंह
प्रो. अनुभूति दूबे
प्रो. विजय चहल
प्रो. विनय कुमार सिंह
डॉ. महेन्द्र कुमार सिंह
डॉ. सचिन कुमार सिंह
श्री धर्मेन्द्र प्रकाश त्रिपाठी, वित्त अधिकारी
डॉ. ओम प्रकाश, कुलसचिव, मो. 9450362236
प्रो. सुषमा पाण्डेय, मो. 9451273249
प्रो. आर. पी. सिंह, मो. 9935541965
प्रो. एस.के. सिंह, मो. 9451559355
प्रो. दीपक प्रकाश त्यागी, मो. 9415824589
प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी, मो. 9415283447
प्रो. नरेन्द्र कुमार राना, मो. 9415210852
प्रो. संजीत कुमार गुप्ता, मो. 9450884022
प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा, नोडल समन्वयक
मो. 9889026688

दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर

ddushodhpeeth@gmail.com
youtube.com/ddushodhpeeth
facebook.com/ddushodhpeeth

पंजीकरण एवं पेपर अपलोडिंग

यह संगोष्ठी ऑफलाइन एवं ऑनलाइन मोड में होगी। ऑफलाइन का पंजीकरण शुल्क ₹ 1000 रूपये तथा छात्रों के लिए ₹ 500 होगा। उपरोक्त विषय-सत्रों के किसी भी मुद्दे पर कृपया 10 फरवरी, 2021 तक एमएस वर्ड में राइट-अप, शोध पत्र (अधिकतम 3500 शब्दों में)@सार (300 शब्द तक) निम्न लिंक पर रजिस्टर व अपलोड करें।

LINK :
https://forms.gle/dYd4hE3B8GmKk6YJA

SCAN ME

intseminarddu@gmail.com